हमारे अगुवों की ओर से सन्देश

एकता का आश्चर्यकर्म

दिनाँक 27 अक्टूबर 2016, गुरुवार को जारी विज्ञप्ति

विभिन्न राष्ट्रों या विभिन्न समुदायों के मध्य एकता कैसे कायम की जा सकती है? बाबुल के गुम्मट के समय से अनेक तरीकों को अपनाने का प्रयास किया गया है। बाबुल के गुम्मट की कहानी में, लोगों ने एक साझा दर्शन और एक ही लक्ष्य को लेकर कार्य करने के द्वारा एकता हासिल करने का प्रयास किया; और जैसा कि हम अच्छी तरह से जानते हैं, कि यह कार्य विफल हो गया।

एकता बनाने का एक अन्य तरीका है, एक जैसी कहानी या अनुभव। अनेक लोगों के अनुभवों को एक ही कहानी में पिरोते हुए उसका आधार एक समान और प्रेरक मूल को बनाना भी एक जोड़ने वाला तत्व सिद्ध हो सकता है। किन्तु, अलग अलग लोगों या अलग अलग संस्कृतियों वाले अनुभवों को एक उत्प्रेरक कहानी या वर्णन के रूप में रच पाना कठिन है।

एक अन्य विकल्प – कभी कभी इस तरीके को राजनीति या धर्म पर लागू किया जाता है – सारी असमानताओं को दूर कर जीवन को एक समान दृष्टिकोण से देखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हुए, सारी विभिन्नताओं को समाप्त कर देना। इतिहास में हमने अनेक बार इस विकल्प के विफल परिणामों को देखा है।

कभी कभी कलीसिया में एक अन्य विकल्प का प्रचार किया जाता है, और वह यह है कि धारणाओं/विश्वासमत की सूची बना कर समूह के द्वारा इसका पालन करना अनिवार्य कर दिया जाता है जिससे कि यह निर्धारित किया जा सके कि कौन इस समूह का हिस्सा है और कौन उस समूह से बाहर है? यह दुखद है कि विश्वासमत और विश्वास के अंगीकार का भी कभी कभी इस अर्थ में प्रयोग किया जाता है।

ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट प्रोफाइल रिसर्च *(गैप)* के निष्कर्षों की ओर ध्यान देते हुए हम स्वयं से यह प्रश्न करें: मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के अन्तर्गत आने वाली ऐसी ऐसी असमानताओं वाले समूहों के बीच में एकता को बढ़ावा देने के लिए क्या किया जा सकता है?

अनेक वर्षों से, एमडबल्यूसी की सदस्य कलीसियाएं एक शोध कार्य में जुटी हुई थी जिससे कि यह जाना जा सके कि वर्तमान में ऐनाबैपटिस्ट लोगों के रूप में हम क्या हैं। *कूरियर* के वर्तमान अंक में, इस सर्वेक्षण के कुछ निष्कर्षों के संकेतों को हम देख सकते हैं। जैसा कि एक लेख में यह सुझाव दिया गया है कि हमारे वैश्विक परिवार में ऐसी असमानता एक और बड़ी एकता के लिए एक अद्वितीय अवसर बन सकती है।

परन्तु, ऐसी एकता को किस तरह से सम्भव बनाया जा सकता है?

यह हमारे साझा विश्वासपाठ में नहीं है, यह वही साझा विश्वासपाठ है जिसे विगत वर्षों प्रत्येक सन्दर्भ में यीशु मसीह के पीछे चलने के अपने अपने अनुभव की अभिव्यक्ति के रूप में तैयार किया गया है। एमडबल्यूसी की सदस्य कलीसियाएं इस विश्वासपाठ के बिना ही 75 से भी अधिक वर्षों तक एकता में हो कर चलती रही।

न ही यह एक समान इतिहास का प्रश्न है। यद्यपि ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाओं के रूप में हम सोलहवीं शताब्दी के आमूलचूल धर्मसुधार में अपनी पहचान देखते हैं, परन्तु यह स्पष्ट है कि हमारे विश्वास की उत्पत्तियाँ उतनी ही अद्भुत है जैसी कि हमारी वर्तमान असमानताएं और भिन्नताएं।

पवित्रशास्त्र के अनुसार, इसका सिर्फ एक ही स्पष्टिकरण दिया गया है। हमारे वैश्विक समुदाय की एकता मानवीय प्रयासों या किसी भी ऐसी चीज़ का परिणाम नहीं है जिसे हम स्वयं उत्पन्न कर पाएं। यह परमेश्वर का एक दान है जिसका आनन्द हम आज हमारे बीच में पवित्र आत्मा के कार्य के माध्यम से उठा सकते हैं। सच्ची सहभागिता संस्थागत नियमों और औपचारिकताओं से नहीं, परन्तु मसीह द्वारा उस क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य के द्वारा सम्भव है, जिस पर परमेश्वर ने अनेक संस्कृतियों, जातियों, गोत्रों, और भाषाओं वाली एक नई सृष्टि की रचना की।

वर्तमान में, सहभागिता की समान मेज़ पर बैठ कर अपनी भिन्नताओं की खूबसूरती का आनन्द उठा पाना तभी सम्भव है जब हम ऐसा परमेश्वर के मेम्ने को बीच में रख कर करते हैं, जो हमारे विश्वास का केन्द्र और हमारी एकता की नींव है।

आइये और हमारे साथ एकता के आश्चर्यकर्म और हमारी भिन्नताओं की खूबसूरती का उत्सव मनाइये।

– सीज़र गार्सिया, एमडबल्यूसी जनरल सेक्रेटरी, बगोटा, कोलम्बिया मुख्यालय से अपनी सेवकाई देते हैं।

यह लेख सबसे पहले अक्टूबर 2016 की कूरियर पत्रिका में प्रकाशित हुआ।